● **सुनो, समझो और गाओ :**

२. काटो खेताँ काटो रे!

–सुलेमान खतीब

जन्म : २६ दिसंबर १९२२ **मृत्यु :** २२ अक्तूबर१९७८ **रचनाएँ :** 'केवड़े का बन' **परिचय :**आपने दक्खिनी हिंदी में अनेक नाटक लिखे हैं। इस कविता में दक्खिनी हिंदी का प्रयोग किया गया है । कवि ने श्रमप्रतिष्ठा को महत्त्व देते हुए खेत से प्राप्त होने वाली संपत्ति एवं समृद्धि का गुणगान किया है ।

काटो खेताँ काटो रे,
घर-घर रोटी बाँटो रे ।

खून-पसीना पेरो रे,
अनाज के भुट्टे काटो रे ।

खेत में लछमी बोले रे,
सोना-चाँदी डोले रे ।

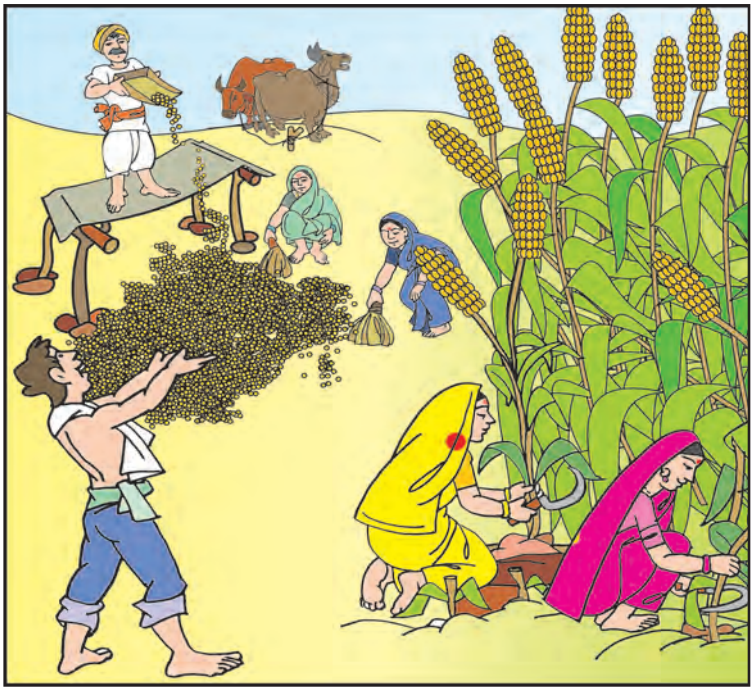

पाक पवन के पल्लों में,
मोती-मूँगे रोले रे ।

काटो खेताँ काटो रे,
घर-घर रोटी बाँटो रे ।

दुनिया न्हाटी न्हाटेंगे,
झाड़-झकोले छाँटेंगे ।

❑ विद्यार्थियों को हाव-भाव, लय-तालसहित कविता कक्षा में सुनाएँ । कविता में आए दक्खिनी हिंदी के शब्दों का उच्चारण एवं अर्थ समझाएँ । कविता का एकल, गुट एवं समूह में सस्वर पाठ कराएँ । कविता की साभिनय प्रस्तुति कराएँ ।

नदी-नाले पाटेंगे,
नई फसल काटेंगे ।

आँखों से आँसू पोछेंगे,
जगत में खुशियाँ बाँटेंगे ।

काटो खेताँ काटो रे,
घर-घर रोटी बाँटो रे ।

खून-पसीना पेरो रे,
अनाज के भुट्टे काटो रे ।

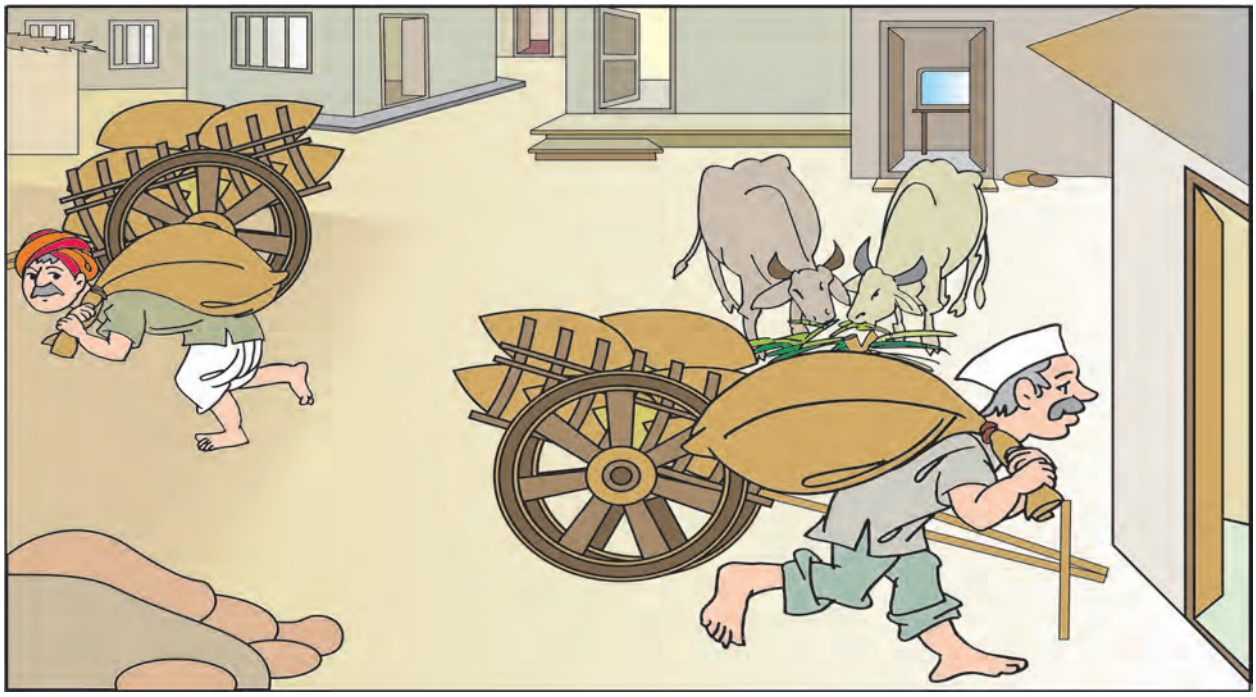

पढ़ो :

हिंदी भारत संघ की राजभाषा है । भारत की गंगा-यमुना संस्कृति की छाप हिंदी पर भी दिखाई देती है । हमारे देश में जितनी सरलता से नए विचार, सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ रच-बस कर यहीं की हो गई हैं, वैसे ही हिंदी में भी देशी-विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द घुल-मिलकर इसके अभिन्न अंग बन गए हैं । हिंदी भारत की आत्मा है ।